निवृत्ते नारदप्रश्ने यन्मवानं समासतः। श्रुतास्ते विस्तराः सर्वे य पूर्वे जनमेजय। विष्णासु माथुरे कलेप यत्र ते संग्रया महान्। वासुर्वगतिश्चेव सा मया समदाहता। त्राञ्चर्यञ्चेव नान्याऽस्ति त्राञ्चर्यं विद्धि केशवं। सर्वेव्याञ्चर्यकत्येषु नास्याञ्चर्यमेवणाव। विद्धि केशवं। सर्वेव्याञ्चर्यकत्येषु नास्याञ्चर्यमेवणाव। स एष धन्या धन्यानां धन्यक्रद्धन्यभावनः। देवेब्बपि सदैत्येषु नास्ति धन्यतराऽच्युतात्। श्रादित्या वसवा रहा श्रश्यनी मरुतस्त्रया । गगनं भद्धिश्रश्चेव सिललं च्यातिरेव च । हे हिल्लं विश्व रष धाता विधाता च मंहर्का काल रव च। मत्यं धर्मास्तपश्चैव ब्रह्मा चैव मनातनः। त्रनन्त्रथेव नागानां रुट्राणा शक्षरः स्रतः। जङ्गमाजङ्गमञ्चव जगनारायणाद्भव। शतसाच जगत् मध्ये प्रस्थेत जनाई नात्। जगच मध्ये देवेशांत नमस्त भारत। पूज्यस सततं सर्विदेवरय सनातनः। दत्युकं वाण्युद्धं ते माहात्यं केशवस्य च वग्रप्रतिष्ठामतुलां अवणादेव लाख्ये । ये चेदं धार्यियनित वाण्यद्भमन्तमं। केणवस्य च माहात्यं नाधर्मसान् भजिव्यति। एषा ते वैष्णवी चय्या मया कार्त्यन कीर्त्तिता। पृच्छतस्तात यज्ञे ऽसिनिवन्ते जनमेजय। त्रायुर्धपर्वमिष्वनं या होदं धारयेत्ररः। सर्वपापविनिर्मतो विष्णुलोकञ्च गच्छति। कल्यमत्याय यो नित्यं कीर्त्तयेत्ससमाहितः। न तस्य दुरितं किञ्चिदि इ लोके पर व च। ब्राह्मणः सर्ववेदी स्थात चित्रवी विजयी भवेत्। वैद्यो धनमसृद्धः स्वाच्ह्रदे। गच्छेच महति। नाग्रुभं प्राप्नुयात्किचिद्दोर्घमायुरवाष्ट्रयात्। ११०,० ॥ मीतिष्वाच॥ इति पारिश्वितो राजा वैशम्पायनभाषितं। अला प्रीतमना जातो हरिवंशं दिजर्षभः। एवं शानक मंचेपादिस्तरेण तथैव च। प्राक्ता वे सर्ववंशास्त किसूयः श्रोतिमक्सि। इति श्रीमहाभारते खिलेषु हरिवंगे विष्णुपर्वणि नवत्यधिकगताऽध्यायः॥ १८०॥ समाप्तेश्चरं विष्णुपर्व॥ नतः प्रतिगरहोता स स्वीतिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमार्गानिमा

ामनियमें है।। त्रय भविष्यपञ्च ।। मार्थको एकाको कर्न तिन्द्र कि ॥ श्रीनक उवाच ॥ जनमेजयस्य के पुत्राः पयन्ते सामहर्षणे । कस्मिन् प्रतिष्ठितो वंगः पाण्डवाना महातानां । रतिद्काम्यहं श्रीतं परं केात्रहलं हि मे। तत्तः श्रुतवतां श्रेष्ठ सर्वविचासि मे मतः। ॥ मीतिस्वाच॥ पारिचितस्य काश्यायां दी पुन्नी मन्बभवतुः। चन्द्रापीड्य नृपतिः स्रयोपीड्य मेाचिवत्। ११९६६ चन्द्रापीडस्य पुत्राणां शतमुत्तमधन्विना । जानमेजय दत्येवं चात्रं भवि परिश्रुतं। तेथं। ज्येष्ठस्त राजासीत् पुरे वारणसाक्रये। सत्यक्षा महाबा क्रयंज्वा विपुत्तदित्तणः। जिल्लाम हा सत्यकर्णस्य दायादः श्वेतकर्णः प्रतापवान्। श्रपुत्तः स तु धर्मात्मा प्रविवेश तपोवनं । तसादनगताद्वभं यादवी प्रत्यपद्यता मुचारोर्द्हिता मुभूमा लिनी भारमा लिनी । वाहण विकास स तु जनानि गर्भस्य खेतकर्णः प्रजेखरः। ऋनग इद्वतं प्रवीर्महाप्रसानमच्युत । सा दृष्ट्वा संप्रयातं तं मालिनी पृष्ठतीऽन्वगात्। पथि सा सुषुवे सुभूर्वने राजीवलीचनं। कुमारं तं परित्यच्य भन्तारं चान्यगञ्चत । पतिव्रता महाभागा द्रीपदीव पुरा पतीन।